2018-19

बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी साहित्य : प्रथम प्रश्न पत्र

रीतिकालीन काव्य

समय: 3 घण्टे पूर्णांक: 100

पाठ्यांश :

1. केशवदास : रामचन्द्रिका –

सरस्वती–वन्दना – बानी जगरानी की .....तदपि नई नई।।
राम–वन्दना – पूरण पुराण .....मुक्ति को।।
राम परशुराम– संवाद – विस्वामित्र विदा भये ..... मैं तनमन सुख पायो।।
पंचवटी–वन वर्णन – फल फूलनि पूरे ..... मधु जानै।।
– सब जाति फटी ..... पंचवटी।।
हनुमान–लंका गमन – हरि कैसो वाहन ..... लंक को।।
रावण–प्रासाद – तब हरि रावन ..... पुर सूनो।।
– कहू किन्नरी ..... सीता।।
सीता–दर्शन – धरे एक बेनी ..... पीयूष भीनी।।
– किधौं जीव की ..... बहायो।।

2. बिहारी :

– मेरी भव बाधा हरौ.....
–नीकी दई अनाकनी.....
–झीने पट में झलमली.....
–लग्यौ सुमनु ह्वै है सफलु.....
–अजौं तर्यौना ही रह्यौ.....
–जम–करि–मुंह तरहरि पर्यौ.....
–तौ पर बारौं उरबसी.....
–कहत, नटत, रीझत, खिजत.....
– कौन भांति रहि है बिरदु .....
– नहिं परागु, नहिं मधुर मधु.....
–मंगल बिंदु सुरंग, मुख ससि.....
–अंग–अंग नग जगमगैं.....
–कब को टेरत दीन रट.....
–पत्रा ही तिथि पाइयै.....
–लंत्री नाद कवित्त–रस.....
–सकराकृत गोपाल कै.....
–या अनुरागी चित्त की.....
–करी बिरह ऐसी.....
–जप माला, छापा, तिलक.....
–तजि तीरथ, हरि–राधिका.....
–औंधाई सीसी, सु लखि.....
–मैं बरजी कै बार तू.....
–आडे दै आले बसन.....
–स्वारथ सुकृतु न.....
–सीस–मुकुट,कटि काछनी.....
–हरि–छवि–जल जब तै.....

प्रभारी अधिकारी
अकादमिक–प्रथम

–इत आवति चलि जाति.....
–भूषन–भारू सम्भारिहै.....
–कहत सबै बेंदी दिऐ.....
–कोरि जतन कोऊ करौ.....
–लिखन बैठि जाकी सबी.....
–दृग उरझत, टूटत कुटुम.....
–रनित भृंग घंटावली.....
–अधर धरत हरि कै परत.....
–करौ कुबत जग.....
–बतरस लालच लाल की.....
–कहलाने एकत बसत.....
–डिगत पानि डिगुलात गिरि.....
–चिरजीवौ जोरी जुरै.....
–सघन कुंज छाया सुखद.....
(बिहारी रत्नाकर: सं. जगन्नाथदास रत्नाकर)

3. देव:–
–सूनी कै परम पद.....
–डार द्रुम पलना.....
–कथा मैं न कंथा मैं.....
–जब तें कुंवर कान्ह.....
–प्रेम गुन बांधि.....
–बंसुरी सुनि देखन दौरि.....
–देव मैं सीस बसायो.....
–बरूनी बघम्बर में गूदरी.....
–धार मैं धाय धंसी निरधार ह्वै.....
–ऐसो जो हौं जानतो कि.....
–रीझि रीझि, रहसि रहसि.....
–कोई कहौ कुलटा.....
–राधिका कान्ह को ध्यान करै.....
–झहरि, झहरि झीनी बूँद.....
–सांसन ही सौं.....
–सहर–सहर सौधों सीतल.....
–खेलत फाग.....
–आई बरसाने ते.....
–जाके न काम न क्रोध.....
– विद्रुम और बंधूक जपा.....

4. भूषण :
–साहि तनै सरजा समरत्थ.....
–देखत ऊँचाई उघरत.....
–कामिनी कंत सों.....
–पूरब के उत्तर के .....
–दारून दुगुन दुरजोधन.....
–साजि चतुरंग सैन.....

प्रभारी अधिकारी
अकादमिक–प्रथम

–ऊँचे घोर मन्दर के.....
–उतरि पलंग तें न.....
–इन्द्र जिमि जंभ पर.....
–कलियुग जलधि अपार.....
–छूटत कमान बान.....
–जिन फन फूत्कार.....
–गरुड को दावा सदा.....
–बेद राखे विदित.....
–आपस की फूट ही तें.....
–भुज भुजगेस की वे.....
–हैबर हरट्ट साजि.....
–चाक चक चमू को .....
–राजत अखंड तेज.....
–देस दहबटि्ट आयो.....
(भूषण ग्रथावली : सं. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

5. घनानंद :

–रूपनिधान सुजान सखी.....
–आखि ही मेरी पै.....
–हीन भएँ जल मीन.....
–मीत सुजान अनीति करो.....
–आस ही अकास मधि.....
–जेतो घट सौधौं.....
–चोप चाह चायनि.....
–एरे बीर पौन.....
–कारी कूर कोकिला.....
–प्रीतम सुजान मेरे हित के.....
–छवि को सदन.....
–वहै मुसक्यानि.....
–अन्तर उदेग दाह.....
–हिये में जु आरति.....
–दिननि के फेर सों.....
–कौन की सरन जैये.....
–भोर ते साँझ लौं.....
–सोये न सोइबो.....
–निस द्यौस खरी.....
–अति सूधो सनेह को.....
(घनआनंद कवित्त : सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

6. पद्माकर :

–विधि के कमंडल की.....
–नीर के निकट रेनु.....
–कलित कपूर में न.....
–जमपुर द्वारे लगे.....
–कूरम पे कोल.....
–पात बिन कीन्हें ऐसी भांति.....

प्रभारी अधिकारी
अकादमिक–प्रथम

–कूलन में केलि में............
–ह्वै थिर मन्दिर में............
–भोग में रोग............
–ब्याध हू तें बिहद............
–एके संग धाये............
–सम्पति सुमेर की............
–औरे भाँति कुंजन में............
–फाग की भीरि............
–सजि बृज चंद पै............
(पद्माकर ग्रंथावली) : सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

7. सेनापति :
–सुरतरु सार की............
–करत कलोल श्रुति दीरघ............
–कालिंदी की धार निरधार है............
–सेनापति उनए नए जलद सावन के............
–केतकि असोक नव चम्पक............
–मालती की माल तेरे तन कौ............
–चित चुभी आनि, मुसकानि............
–बरन बरन तरू फूले............
–छूटत फुहारे सोई बरसा............
–सीत कौ प्रबल सेनापति............
(सेनापति कृत कवित्त रत्नाकर सं. उमाशंकर शुक्ल)

8. आलम :
–पौन के परस ....
–कहूँ भूल्यौ बेनु............
–अंग अंग जगै जोति............
–अटा चढ़ी हुती............
–चंद को चकोर देखै............
–निधरक भई अनुगवति............
–तरनिजा तट बंसी–वट............
–वारे ते न पलक............
–पंकज पटीर देखे............
–उत्पनि रत रितुपति............
(आलम ग्रंथावली : सं. विद्यानिवास मिश्र)

2. रीतिकाल का इतिहास।

3. काव्य रीतियां, काव्यगुण, काव्य दोष, रस–परिभाषा, प्रकार, रसावयव

अंक विभाजन :

प्र. 1 कुल चार व्याख्याएँ (काव्य संकलन से) (आन्तरिक विकल्प देय)	–	08 X 04 = 32 अंक
प्र. 2, 3, 4 कुल तीन आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) (काव्य संकलन पर आधारित)	–	15 X 03 = 45 अंक
प्र. 5 (अ) कुल तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 60 शब्द)	–	05 X 03 = 15 अंक
(ब) कुल चार अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 20 शब्द)	–	02 X 04 = 08 अंक

(प्रश्न 5 दूसरी व तीसरी इकाई पर आधारित होगा)

प्रभारी अधिकारी
एकादमिक-प्रथम

बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी साहित्य : द्वितीय प्रश्न पत्र

नाटक एवं एकांकी

समय: 3 घण्टे पूर्णांक: 100

पाठ्य पुस्तकें :

1. नाटक:–

   ध्रुवस्वामिनी : जयशंकर प्रसाद

2. एकांकी:–

1. रामकुमार वर्मा	–	दीपदान
2. भुवनेश्वर	–	ऊसर
3. उदयशंकर भट्ट	–	पर्दे के पीछे
4. लक्ष्मीनारायण मिश्र	–	बलहीन
5. उपेन्द्रनाथ अश्क	–	सूखी डाली
6. जगदीश चन्द्र माथुर	–	रीढ की हड्डी
7. विष्णु प्रभाकर	–	और वह जा न सकी
8. लक्ष्मीनारायण लाल	–	बसन्त ऋतु का नाटक

3. नाटक का उद्भव एवं विकास
4. एकांकी का उद्भव एवं विकास

अंक विभाजन :

प्र. 1	कुल चार व्याख्याएं (दो नाटक से, दो एकांकी संग्रह से) (आन्तरिक विकल्प देय)	–	08 X 04 = 32 अंक
प्र. 2, 3 व 4	कुल तीन आलोचनात्मक प्रश्न (एक नाटक पर, दो एकांकी संग्रह पर) (आन्तरिक विकल्प देय)	–	15 X 03 = 45 अंक
प्र. 5 (अ)	कुल तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 50 शब्द)	–	05 X 03 = 15 अंक
(ब)	चार अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 20 शब्द) (प्रश्न 5 तीसरी व चौथी इकाई पर आधारित होगा)	–	02 X 04 = 08 अंक

प्रभारी अधिकारी
अकादमिक-प्रथम